सत्ता की साझेदारी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सत्ता की साझेदारी का परिचय और महत्व

प्रश्न 1 (आसान). लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – यह विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव को कम करती है और राजनीतिक स्थिरता बनाए रखती है।

प्रश्न 2 (आसान). अगर किसी देश में एक ही समुदाय शासन करे, तो क्या हो सकता है?
उत्तर – दूसरे समुदायों में असंतोष बढ़ सकता है और देश में गृहयुद्ध जैसी स्थिति पैदा हो सकती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). सत्ता की साझेदारी से देश को क्या फायदे होते हैं?
उत्तर – इससे देश में शांति और सद्भाव बना रहता है, सभी को समान अवसर मिलते हैं, और सरकार अधिक जवाबदेह बनती है।

प्रश्न 4 (कठिन). सत्ता की साझेदारी के अभाव में किसी देश के आर्थिक विकास पर क्या असर पड़ सकता है?
उत्तर – अशांत और अस्थिर माहौल में निवेश कम होगा, लोगों का ध्यान झगड़ों में रहेगा, जिससे आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ जाएगी या रुक जाएगी।

» बेल्जियम की जातीय बनावट और भाषाई तनाव

प्रश्न 5 (आसान). बेल्जियम में कौन सी भाषा बोलने वाले लोग सबसे ज़्यादा थे?
उत्तर – डच भाषी।

प्रश्न 6 (आसान). बेल्जियम की राजधानी का नाम क्या है?
उत्तर – ब्रुसेल्स।

प्रश्न 7 (मध्यम). बेल्जियम में भाषाई तनाव का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – फ्रेंच भाषी अल्पसंख्यक होने के बावजूद ज़्यादा समृद्ध और ताकतवर थे, जिससे डच भाषियों को नाराज़गी थी।

प्रश्न 8 (कठिन). बेल्जियम की जातीय बनावट और ब्रुसेल्स की जातीय बनावट में क्या मुख्य अंतर था?
उत्तर – पूरे बेल्जियम में डच भाषी ज़्यादा थे (59%), जबकि ब्रुसेल्स में फ्रेंच भाषी ज़्यादा थे (80%)। यह अंतर ही तनाव का एक बड़ा कारण बना।

» श्रीलंका की जातीय बनावट और तमिल-सिंहली संघर्ष

प्रश्न 9 (आसान). श्रीलंका में सबसे बड़ा जातीय समूह कौन सा था?
उत्तर – सिंहली समुदाय।

प्रश्न 10 (आसान). श्रीलंका की कुल जनसंख्या में तमिलों का प्रतिशत कितना था?
उत्तर – 18 प्रतिशत।

प्रश्न 11 (मध्यम). तमिलों के दो प्रमुख समूहों के नाम बताइए।
उत्तर – श्रीलंकाई तमिल और भारतीय तमिल।

प्रश्न 12 (कठिन). श्रीलंका में सिंहली और तमिल के अलावा और कौन सा अल्पसंख्यक समुदाय था और वे कौन सी भाषाएं बोलते थे?
उत्तर – ईसाई समुदाय था, जो 7% था। वे सिंहली और तमिल दोनों भाषाएं बोलते थे।

» श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद

प्रश्न 13 (आसान). श्रीलंका में कौन सा समुदाय बहुसंख्यक था?
उत्तर – सिंहली समुदाय।

प्रश्न 14 (आसान). किस भाषा को श्रीलंका में एकमात्र राजभाषा घोषित किया गया?
उत्तर – सिंहली भाषा को।

प्रश्न 15 (मध्यम). श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद की नीति अपनाने के क्या मुख्य परिणाम हुए?
उत्तर – बहुसंख्यकवाद की नीति के कारण तमिलों में असंतोष बढ़ा, जिससे उनके और सिंहलियों के बीच संबंध बिगड़ गए और अंततः गृहयुद्ध शुरू हो गया।

प्रश्न 16 (कठिन). बेल्जियम ने श्रीलंका से अलग रास्ता कैसे अपनाया? दोनों की नीतियों में क्या अंतर था?
उत्तर – बेल्जियम ने सत्ता की साझेदारी का रास्ता अपनाया, जहाँ डच और फ्रेंच-भाषी दोनों समुदायों को सरकार में समान प्रतिनिधित्व मिला। श्रीलंका ने इसके विपरीत, बहुसंख्यक सिंहली समुदाय की श्रेष्ठता स्थापित की और तमिलों की उपेक्षा की, जिससे संघर्ष हुआ।

» बेल्जियम की समझदारी: सत्ता की साझेदारी का मॉडल

प्रश्न 17 (आसान). बेल्जियम में मुख्य रूप से कौन-सी दो भाषाएँ बोलने वाले समुदाय रहते थे?
उत्तर – डच और फ्रेंच।

प्रश्न 18 (आसान). बेल्जियम ने अपने संविधान में कितनी बार संशोधन किए थे?
उत्तर – चार बार।

प्रश्न 19 (मध्यम). बेल्जियम के मॉडल में 'सामुदायिक सरकार' का क्या काम था?
उत्तर – सामुदायिक सरकार भाषा, संस्कृति और शिक्षा जैसे मसलों पर फैसले लेती थी और इसे एक ही भाषा बोलने वाले लोग चुनते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). बेल्जियम ने अपने संविधान में बार-बार संशोधन क्यों किए?
उत्तर – बेल्जियम ने संविधान में संशोधन इसलिए किए ताकि देश में रहने वाले किसी भी समुदाय को बेगानेपन का अहसास न हो और सभी मिल-जुलकर रह सकें, जिससे देश की एकता बनी रहे और गृहयुद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न न हो।

» सत्ता की साझेदारी क्यों जरूरी है: युक्तिपरक और नैतिक तर्क

प्रश्न 21 (आसान). सत्ता की साझेदारी के पीछे युक्तिपरक तर्क क्या है?
उत्तर – यह सामाजिक टकराव को कम करता है और राजनीतिक स्थिरता लाता है।

प्रश्न 22 (आसान). नैतिक तर्क के अनुसार, सत्ता की साझेदारी क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – यह लोकतंत्र की आत्मा है और जनता के अधिकार का सम्मान करती है।

प्रश्न 23 (मध्यम). बेल्जियम के मॉडल में युक्तिपरक और नैतिक तर्क दोनों कैसे लागू होते हैं?
उत्तर – युक्तिपरक: बेल्जियम ने अलग-अलग भाषाई समुदायों को सत्ता में हिस्सेदारी देकर टकराव को रोका और देश को टूटने से बचाया। नैतिक: उन्होंने सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए और सबको शासन में शामिल किया, जो लोकतंत्र के लिए सही है।

प्रश्न 24 (कठिन). अगर किसी देश में एक ही समुदाय बहुमत में है, तो भी क्या सत्ता की साझेदारी ज़रूरी है? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दें।
उत्तर – हाँ, बिल्कुल ज़रूरी है। अगर बहुमत वाला समुदाय अकेले शासन करेगा तो अल्पसंख्यकों में अलगाव की भावना आ सकती है, जिससे सामाजिक टकराव बढ़ सकता है (युक्तिपरक तर्क)। इसके अलावा, किसी भी सच्चे लोकतंत्र में सभी नागरिकों को शासन में हिस्सेदारी का अधिकार होता है, चाहे वे अल्पसंख्यक ही क्यों न हों (नैतिक तर्क)।

» खलील की उलझन: लेबनान का विशिष्ट सत्ता साझेदारी मॉडल

प्रश्न 25 (आसान). लेबनान में राष्ट्रपति का पद किस धार्मिक समुदाय के लिए आरक्षित है?
उत्तर – मैरोनाइट पंथ के कैथोलिक ईसाई।

प्रश्न 26 (आसान). लेबनान में प्रधानमंत्री का पद किस समुदाय के लिए आरक्षित है?
उत्तर – सुन्नी मुसलमान।

प्रश्न 27 (मध्यम). खलील को लेबनान की मौजूदा सत्ता साझेदारी व्यवस्था में क्या गड़बड़ी लगती है?
उत्तर – उसे लगता है कि पद धर्म के आधार पर आरक्षित होने से लोकप्रिय और काबिल व्यक्ति भी बड़े पद पर नहीं पहुँच सकता, अगर वह उस विशेष धर्म का न हो। वह लोकतांत्रिक चुनाव चाहता है जहाँ सबसे ज़्यादा वोट पाने वाला व्यक्ति पद ग्रहण करे।

प्रश्न 28 (कठिन). आपको क्या लगता है, लेबनान की यह विशिष्ट सत्ता साझेदारी व्यवस्था शांति के लिए बेहतर है या खलील के चुनाव-आधारित सुझाव से ज्यादा न्यायपूर्ण व्यवस्था बन सकती है? अपने विचार दीजिए।
उत्तर – यह एक विचारणीय प्रश्न है। मौजूदा व्यवस्था गृहयुद्ध के बाद शांति स्थापित करने में सफल रही, लेकिन खलील का सुझाव अधिक लोकतांत्रिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित है। दोनों के अपने फायदे और नुकसान हैं। मौजूदा व्यवस्था स्थिरता देती है लेकिन व्यक्तिगत आकांक्षाओं को रोकती है, जबकि खलील का सुझाव अधिक न्यायपूर्ण लग सकता है लेकिन हो सकता है कि यह फिर से समुदायों के बीच टकराव को जन्म दे।

» सत्ता की साझेदारी के विभिन्न रूप

प्रश्न 29 (आसान). सरकार के मुख्य तीन अंग कौन से हैं जिनके बीच सत्ता की साझेदारी होती है?
उत्तर – विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका।

प्रश्न 30 (आसान). भारत में सरकार के तीन मुख्य स्तर कौन से हैं?
उत्तर – केंद्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय सरकार।

प्रश्न 31 (मध्यम). बेल्जियम में भाषाई समूहों के बीच सत्ता की साझेदारी किस रूप का उदाहरण है?
उत्तर – विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच सत्ता की साझेदारी।

प्रश्न 32 (कठिन). जब चुनाव में कोई भी दल स्पष्ट बहुमत नहीं जीत पाता और कई दल मिलकर सरकार बनाते हैं, तो यह सत्ता की साझेदारी का कौन सा रूप दर्शाता है?
उत्तर – राजनीतिक दलों और दबाव समूहों के बीच सत्ता की साझेदारी।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक देश में 'क', 'ख' और 'ग' नाम के तीन बड़े समुदाय हैं। अगर सारी सरकार सिर्फ 'क' समुदाय के लोगों से बनी हो, तो क्या होगा?

› पहला कदम: 'ख' और 'ग' समुदाय के लोगों को लगेगा कि सरकार उनकी बातें नहीं सुनेगी।
› दूसरा कदम: उनकी ज़रूरतें और शिकायतें अनसुनी रह जाएंगी, जिससे उनमें असंतोष बढ़ेगा।
› तीसरा कदम: यह असंतोष धीरे-धीरे विरोध या झगड़े का रूप ले सकता है, जिससे देश में अशांति फैल जाएगी।
› चौथा कदम: अंत में, सरकार को अपनी मनमानी के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा और देश का विकास रुक जाएगा।

उत्तर – अगर सत्ता की साझेदारी नहीं होगी, तो देश में सामाजिक विभाजन, अस्थिरता और संघर्ष की संभावना बढ़ जाएगी।

उदाहरण 2. बेल्जियम की कुल आबादी में डच और फ्रेंच भाषी लोगों का प्रतिशत क्या था, और राजधानी ब्रुसेल्स में यह अनुपात कैसे अलग था?

› पहले पूरे बेल्जियम की बात करते हैं: यहाँ 59% लोग डच भाषा बोलते थे, जो 'फ्लेमिश' इलाके में रहते थे।

› फिर 40% लोग फ्रेंच भाषा बोलते थे, जो 'वेलोनिया' इलाके में रहते थे।

› अब राजधानी ब्रुसेल्स की बात करते हैं: यहाँ पूरी तरह उलट था! 80% लोग फ्रेंच बोलते थे।

› और ब्रुसेल्स में सिर्फ 20% लोग ही डच बोलते थे।

उत्तर – पूरे बेल्जियम में 59% डच और 40% फ्रेंच भाषी थे। राजधानी ब्रुसेल्स में 80% फ्रेंच और 20% डच भाषी थे।

उदाहरण 3. श्रीलंका की जातीय बनावट को संक्षेप में समझाइए।

› पहला कदम: श्रीलंका में सबसे बड़ा जातीय समूह सिंहलियों का था, जो कुल आबादी का लगभग 74% हिस्सा थे।

› दूसरा कदम: सिंहली ज़्यादातर बौद्ध धर्म को मानते थे और उनकी भाषा सिंहली थी।

› तीसरा कदम: दूसरा प्रमुख समूह तमिलों का था, जो कुल आबादी का लगभग 18% थे।

› चौथा कदम: तमिलों में दो उप-समूह थे - श्रीलंकाई तमिल (जो मूल रूप से श्रीलंका के थे) और भारतीय तमिल (जो उपनिवेश काल में भारत से लाए गए श्रमिकों के वंशज थे)।

› पांचवां कदम: तमिल ज़्यादातर उत्तर और पूर्वी प्रांतों में बसे थे, और वे हिंदू या मुस्लिम धर्म को मानते थे।

› छठा कदम: इनके अलावा, 7% ईसाई भी थे जो सिंहली और तमिल दोनों भाषाएँ बोलते थे।

उत्तर – श्रीलंका की जातीय बनावट में सिंहली (74%, बौद्ध) और तमिल (18%, हिंदू/मुस्लिम, जिनमें श्रीलंकाई और भारतीय तमिल शामिल थे) मुख्य समुदाय थे। 7% ईसाई दोनों भाषाएँ बोलते थे।

उदाहरण 4. श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद के कारण तमिलों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

› पहला, उन्हें लगा कि उनकी अपनी भाषा तमिल को सरकार ने बिल्कुल महत्व नहीं दिया, क्योंकि सिंहली को ही एकमात्र राजभाषा बना दिया गया।

› दूसरा, सरकारी नौकरियों और विश्वविद्यालयों में उन्हें प्राथमिकता नहीं मिली, जिससे उन्हें लगा कि उनके साथ भेदभाव हो रहा है।

› तीसरा, सरकार ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया, जबकि तमिलों में हिंदू और मुसलमान भी थे, जिससे उन्हें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए असुरक्षित महसूस हुआ।

› चौथा, उन्हें समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित किया गया, जिससे वे हाशिए पर चले गए और सरकार में उनकी कोई सुनवाई नहीं रही।

› इन सब कारणों से उन्हें लगा कि उनके हितों की लगातार अनदेखी की जा रही है, जिससे उनके मन में बेगानापन बढ़ता गया और आखिरकार गृहयुद्ध छिड़ गया।

उत्तर – तमिलों को भाषा, शिक्षा, रोज़गार, धर्म और राजनीतिक अधिकारों के क्षेत्र में भेदभाव का सामना करना पड़ा, जिससे उनमें बेगानापन बढ़ा और गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हुई।

उदाहरण 5. बेल्जियम ने अपनी जातीय विविधता (डच-भाषी और फ्रेंच-भाषी) को कैसे संभाला ताकि गृहयुद्ध न हो?

› उन्होंने अपने संविधान में चार बार संशोधन किए ताकि किसी को भी परायापन महसूस न हो।

› केंद्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या बराबर कर दी गई।

› केंद्र सरकार की कई शक्तियाँ क्षेत्रीय सरकारों को दे दी गईं, ताकि राज्य सरकारें केंद्र के अधीन न हों।

› राजधानी ब्रुसेल्स में एक अलग सरकार बनाई गई, जहाँ दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व था। फ्रेंच भाषियों ने यह बात मानी क्योंकि केंद्र में उन्हें भी बराबरी मिली थी।

› एक तीसरी तरह की सरकार बनाई गई, जिसे 'सामुदायिक सरकार' कहते हैं। इसे एक ही भाषा बोलने वाले लोग चुनते थे, चाहे वे कहीं भी रहते हों। यह सरकार भाषा, संस्कृति और शिक्षा से जुड़े फैसले लेती थी।

उत्तर – बेल्जियम ने सत्ता की साझेदारी का एक अनूठा मॉडल विकसित किया, जिसमें सभी समुदायों को सरकार में उचित प्रतिनिधित्व और अधिकार दिए गए, जिससे गृहयुद्ध टल गया और देश एकजुट रहा।

उदाहरण 6. लेबनान में गृहयुद्ध के बाद नेताओं ने सत्ता की साझेदारी का जो मॉडल अपनाया, उसमें युक्तिपरक और नैतिक तर्क कैसे दिखाई देते हैं?

› सबसे पहले, लेबनान में गृहयुद्ध क्यों हुआ? अलग-अलग समुदायों के बीच सत्ता को लेकर टकराव था।

› नेताओं ने जो समझौता किया, उसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जैसे पद अलग-अलग समुदायों के लिए आरक्षित कर दिए। इससे क्या हुआ? हर समुदाय को लगा कि सरकार में उसकी भी हिस्सेदारी है, जिससे टकराव कम हुआ। यह 'युक्तिपरक तर्क' है, क्योंकि इससे 'फायदेमंद परिणाम' (शांति और स्थिरता) मिले।

› भले ही खलील जैसे कुछ लोगों को यह व्यवस्था पूरी तरह लोकतांत्रिक न लगे, लेकिन जिन बड़े-बुज़ुर्गों ने गृहयुद्ध देखा था, वे इसे शांति की गारंटी मानते हैं। उन्होंने समझा कि सबको हिस्सेदारी देना ही 'सही' रास्ता है, भले ही इसके लिए कुछ compromise करने पड़ें। यह 'नैतिक तर्क' है, क्योंकि यह बताता है कि सबको शामिल करना 'बुनियादी रूप से सही' है, लोकतंत्र की आत्मा है।

उत्तर – लेबनान का मॉडल मुख्य रूप से युक्तिपरक तर्क पर आधारित था ताकि टकराव कम हो और शांति बनी रहे। इसमें नैतिक पहलू भी था कि हर समुदाय को अधिकार मिले, हालांकि खलील जैसे युवाओं को यह पूरी तरह लोकतांत्रिक नहीं लगा।

उदाहरण 7. यदि लेबनान में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होते और खलील को सबसे ज़्यादा वोट मिलते, तो क्या वह राष्ट्रपति बन पाता? वर्तमान लेबनानी मॉडल के हिसाब से समझाइए।

› पहला कदम: लेबनान के वर्तमान सत्ता साझेदारी मॉडल को याद करें। इसके तहत राष्ट्रपति का पद मैरोनाइट पंथ के कैथोलिक ईसाई के लिए आरक्षित है।

› दूसरा कदम: खलील की स्थिति पर विचार करें। खलील खुद को किसी विशिष्ट धार्मिक समुदाय से जोड़ना नहीं चाहता और न ही वह मैरोनाइट कैथोलिक है।

› तीसरा कदम: इन दोनों बातों को मिलाकर देखें। भले ही खलील को सबसे ज़्यादा वोट मिलें, लेकिन वर्तमान व्यवस्था के कारण वह राष्ट्रपति नहीं बन पाएगा क्योंकि वह मैरोनाइट कैथोलिक नहीं है।

› चौथा कदम: इससे यह स्पष्ट होता है कि लेबनान में केवल वोट के आधार पर नहीं, बल्कि धार्मिक पहचान के आधार पर पद तय होते हैं।

उत्तर – नहीं, वर्तमान लेबनानी मॉडल के हिसाब से खलील राष्ट्रपति नहीं बन पाता, क्योंकि राष्ट्रपति पद मैरोनाइट कैथोलिक ईसाई के लिए आरक्षित है, और खलील उस समुदाय से नहीं है। उसे चाहे जितने भी वोट मिलें, वह इस पद पर नहीं पहुँच सकता।

उदाहरण 8. भारतीय लोकतंत्र में सरकार के विभिन्न स्तरों पर सत्ता की साझेदारी कैसे काम करती है, एक उदाहरण से समझाइए।

› पहला रूप है, सरकार के विभिन्न स्तरों पर साझेदारी। मतलब, एक देश में सरकार कई लेवल्स पर काम करती है।

› जैसे, हमारे भारत में, सबसे ऊपर 'केंद्र सरकार' होती है, जो पूरे देश के लिए कानून बनाती है।

› उसके नीचे 'राज्य सरकारें' होती हैं, जैसे उत्तर प्रदेश की सरकार या महाराष्ट्र की सरकार, जो अपने-अपने राज्य के मामले देखती हैं।

› और सबसे नीचे होती हैं 'स्थानीय सरकारें', जैसे शहरों में नगर पालिकाएँ और गाँवों में पंचायतें। ये अपने छोटे इलाकों की समस्याओं को सुलझाती हैं।

› इस तरह, शक्ति ऊपर से नीचे तक बँटी होती है, जिससे हर स्तर के लोग अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें और शासन में भागीदारी कर सकें।

उत्तर – भारत में केंद्र सरकार, राज्य सरकारें और स्थानीय सरकारें (नगर पालिका/पंचायतें) मिलकर काम करती हैं। यह सत्ता की साझेदारी का एक उदाहरण है जहाँ सरकार विभिन्न भौगोलिक स्तरों पर शक्ति का बँटवारा करती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'सत्ता की साझेदारी क्यों आवश्यक है?' या 'बेल्जियम और श्रीलंका के उदाहरणों से सत्ता की साझेदारी का महत्व स्पष्ट करें' जैसे प्रश्नों में आती है। इसके महत्व के बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।

• यह भाग बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर बेल्जियम की जातीय बनावट और उसके कारण पैदा हुए तनाव पर सीधा प्रश्न आता है। संख्याएँ याद रखना और कारण को स्पष्ट समझाना ज़रूरी है।

• यह हिस्सा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर श्रीलंका और बेल्जियम के मामलों की तुलना करने वाले प्रश्न अक्सर आते हैं। जातीय बनावट और उसके प्रभावों को अच्छे से समझना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर श्रीलंका के बहुसंख्यकवाद और बेल्जियम की सत्ता-साझेदारी की नीतियों की तुलना करने वाला प्रश्न आता है। आपको दोनों के परिणाम भी बताने होंगे।

• यह बेल्जियम मॉडल बोर्ड परीक्षाओं में 'सत्ता की साझेदारी' को समझाने का एक बहुत महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसे श्रीलंका मॉडल के साथ तुलना करके पढ़ना और समझना, आपको अच्छे अंक दिलाएगा।

• यह खलील की उलझन वाला प्रश्न अक्सर केस स्टडी के रूप में या तर्क-वितर्क वाले प्रश्नों में आता है, इसलिए इस मॉडल के फायदे और नुकसान, खासकर लोकतंत्र के संदर्भ में, अच्छे से समझ लें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। खासकर, सत्ता की साझेदारी के हर रूप का एक उदाहरण याद रखना बहुत ज़रूरी है।

एक नज़र में रिवीज़न

› लोकतंत्र में शक्ति का वितरण टकराव रोकने और स्थिरता के लिए।
› बेल्जियम में डच भाषी बहुसंख्यक, फ्रेंच भाषी अल्पसंख्यक पर धनी; ब्रुसेल्स में उलट स्थिति, जिससे तनाव।
› श्रीलंका में सिंहली (74%, बौद्ध) और तमिल (18%, हिंदू/मुस्लिम) मुख्य जातीय समूह थे।
› श्रीलंका में सिंहली बहुसंख्यकवाद ने तमिलों की अनदेखी कर गृहयुद्ध कराया।
› बेल्जियम: संविधान में 4 संशोधन, समान मंत्री, क्षेत्रीय व सामुदायिक सरकार - गृहयुद्ध टला।
› लेबनान: प्रमुख पद धार्मिक समुदायों के लिए आरक्षित (राष्ट्रपति: मैरोनाइट कैथोलिक, प्रधानमंत्री: सुन्नी)।
› सत्ता साझेदारी: सरकार के अंग, स्तर, सामाजिक समूह, राजनीतिक दल।